वाल्मिकि जयंती

‘ओउम् कृष्णं वंदे जगद्गुरूम्’

प्रो. अनन्त शर्मा
पीठाचार्य, भारतीय विद्या मनीषी
वेदपुराणस्मृति शोधपीठ

मेरे प्रिय आत्मीय जनो निगत शनिवार को भगवान का जन्म दिवस मनाने बैठे थे। ऐसे महापुरुष का जन्म दिवस कैसे मनाया जा सकता है। ये तो बडा कठिन है। पर उस नाम पर हमने श्रृदाञ्जली के रूप में शब्द हमने बता दिये थे। उसके साथ ही प्रश्न था कि जो वाल्मीकी है वाल्मीकी की अमर कृति रामायण के विषय में चर्चा हुई थी। वाल्मीकी के रामायण को लेकर चर्चा करना ये तो एक घण्टे का काम नहीं है और दूसरी चीज और है। हमारा जो इतिहास लेखन का ढंग है और जिस प्रकार से हम इनको धार्मिक पुस्तकें व समझ बैठे है दोनों ही वस्तुतः रामायण के वास्तविक स्वरूप को बताने में हमें मार्ग अवरोध का काम पारायण कर लो उनसे दश नवरात्रि का पारायण करने के बाद में पूछो रामायण में क्या है वो बता नहीं पायेंगे। यह है धर्म पूजा। कितनी सही है। इसी प्रकार इतिहास में जब देखते है तो वहाँ रामायण का समय वाल्मीकी इतिहास में जब देखते है त वहाँ रामायण का समय वाल्मीकी जी का समय अधिक से अधिक ईसा से न.या 8 हजार साल पहले मान लिया जाता है। सात आठ उनको ज्यादा ही लगता है। वो ये नहीं देखते है कि महाभारत जिसका एक-एक वर्ष की गणना के साथ समय निश्चित हो चुका है उस महाभारत में घर घर में पढा जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान का विषय ऐसे भगवान वाल्मीकी का इतिहास का सबसे श्रेष्ठ ग्रंथ माना गया है। हाँ रामायण का नाम महाभारत में आया हुआ है और सब खुश हो गये। वाल्मीकी का नाम महाभारत में बस इससे वाल्मीकी का और रामायण का पुराना परिचय मिल गया। ये सब चीजें सामने खडा हो जाता है तो मैं कुछ प्रारम्भ यहाँ से करूँगा कि राम, रामायण और वाल्मीकी इनके सामनजस्य को बताने वाले सबसे पहली आवश्यकता है इनका काल। आज आम आदमी को मालुम है कि भगवान रामचंद्र त्रेतायुग में हुये थे बल्कि यहाँ तक ज्ञात हो गया है ये पढे लिखे ,लोगों की गणना है कि अगर हम कहीं राम का नाम आया है और आवश्यकता नहीं है तो भी बता देंगे त्रेतायुग मेंहुये भगवान राम। अरे तुम्हें कोई पूँछ भी नहीं रहा यहाँ इसकी अपेक्षा भी नहीं क्यों इसे अनावश्यक कर रहे हो। पर कर लेते है।

जहाँ थोडा सा देखते है कि वहाँ पर त्रेता नहीं आया है अन्य कोई नाम आ गया वहाँ कहते है गलती है। अरे विद्यवान हो शाखिर में एक व्यक्ति जिसको तुम कहते हो हमारे यहाँ का बडा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नाटककार भी है ऐसे

इस मास को द्वापर नाम देखते ही आप अपनी टीका में एक शब्द कह देंगे ''अतिमासश्चिंत्यः'' यहाँ पर मास विचार करने योग्य है कि जो कुछ कर रहा है ठीक है या नहीं। मास ने कहा क्या है कि चार युगों को सामान्यतया दृष्टि में रखते हुये लोगों के उस युग में प्रसिद्ध रूप से किये जाने वाले कुछ कामों की गणना तो वो बिल्कुल क्षीर और दूध जैसे वर्ण का देते हुये राम तक आते आते कहता है व - 'दूर्वा शामअनिभ~सरावणे वधे रामोयुगे द्वापरे।' दूर्वा जैसा जिनका रंग है, श्याम वर्ण के है, और रावण का वध करने के लिए जो द्वापुर में हुये थे। यहाँ पर मैंनें बीस - बाईस लोगों की टीकाएं देखी है किसी व्यक्ति ने नहीं कहा कि मास ने एक इतिहास के जबरदस्त पहलू को इस छोटे से मंगलाचरण में रख दिया है। पर ''भासश्चिंत्य'' क्यों भासश्चिंत्यः क्योंकि आपने कभी जिंदगी में रामायण को ढंग से पढा ही नहीं। अगर रामायण आपका अधिकृत विषय होता तो आपको पता चल जाता है कि भगवान राम का समय द्वापुर में ही है। त्रेता में नहीं है। सम्पूर्ण रामायण में राम के साथ त्रेता का नाम तक नहीं है। रामायण में कहीं राम के लिए त्रेता जैसे शब्द का प्रयोग नहीं हुआ। पहला व्यक्ति है वाल्मीकी जो राम का पूज्य भी है राम के साथ भी है और राम की संततियों को वस्तुत~जिस प्रकार की सन्ततियाँ होती थी वैसी बनाने वाला महापुरुष है और जिसने राम की रचना को अपना ध्येय निश्चित किया है उस व्यक्ति की प्राथमिकता को भूलकर उसकी आधीनता को भूलकर अब तक त्रेतायुग से बाहर राम को निकलने ही नहीं दे रहे है ये भयंकर विडम्बना है। मैं कह रहा हूँ रामायण को अगर इस दृष्टि से हम पढेंगे तो हमें कुछ मिलेगा और सूर सागर से रामायण में ये है कह दिया और छोड दिया लऔर लिया कुछ नहीं। मैं कुछ राम के लिए आप सब कुछ भूल जाइये। केवल एक ही बात लीजिये वो बात ये है कि राम जबरदस्त धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। किसी भी स्थिति ने किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन आवे वो अच्छा हो बुरा हो कैसा भी हो पर राम उस वक्त ये देखते थे मेरे वास्तविक धर्म के पालन में कहीं कोई बाधा तो नहीं पड रही। बहुत सुंदर उदाहरण महाभारत में भगवान व्यास ने दिया है जो कहना चाहिये कि व्यास की देन नहीं है। उनकी तो देन है महाभारत जिसमें विषय को लिया जा रहा है। युधिष्ठिर अपने भाईयों के साथ जुए में हारकर 12 वर्ष का वनवास व 1 वर्ष का अज्ञात वास भोगने जंगलों में जाते हैं। सम्राट नहीं है। कोई जबरदस्ती विश्व विजेता का स्वप्त लेकर चलने वाला सिकंदर नहीं है। पर आते हैं। उनसे बडी बातचीत करते है तो ऐसे ही क्रम महर्षि मार्कण्डेय वहाँ आ गये। मार्ककण्डेय बहुत पुराने व्यक्तियों में माने जाते हैं तो युधिष्ठिर के चेहरे को देखकर के उनको हँसी सी आ गई। मुस्कुराहट सी आ गई तो युधिष्ठिर को थोडा मन में खटका पर वो तो अपने आप में जिनेंद्रिय थे तो सम्पूर्ण त्याग के साथ सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ अंदर के स्नेह को उडेल कर के उन्होंने जिस प्रकार मार्कण्डेय का स्वागत सत्कार करना था किया। जब सब कुछ काम हो गया और वो विरजमान हो गये तब युधिष्ठिर ने एक छोटी सी बा कही। भगवान आपने मुझमें ऐसी क्या चीज देखी जो आप मुस्कुराए। मैं अपनी दृष्टि से अपने धर्म का पालन सही ढंग से कर रहा हूँ। मुझे थोडा सा विलक्षण लगा जैसे अपमान लगा हो। ऋ षि क्या कहते है कि तुम्हें देख मुझे राम याद आ गये। यानि वाल्मीकी को कितना गर्व होना चाहिए कि उन्होंने राम के जिस चरित्र को किया है उस

चरित्र की सराहना करने वाले दूसरे लोग बैठे है। मार्कण्डेय तो वाल्मीकी से भी प्राचीन माने जाते हैं वो कहते है कि मुझे ऐसा लगा कि मैं तुम में राम को देख रहा हूँ तो मार्कण्डेय जैसे ऋषि ने नाम लिया। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा कि देखा कैसी भी स्थिति हो पर में समर्थ हूँ, बलवान हूँ कर सकता हूँ मेरे में पूरा सार्मथ्य है। ऐसा सोचकर अधर्म की बात भी न करे। ये राम का सबसे बडा रूप था। तुम्हारे चार भाई है। तुम्हारे यज्ञ में चारों भाईयों ने चारो ऋषियों को जीत लिया था। वो ज तुम्हें प्राप्त हुआ, तुम्हारा यज्ञ सफल हुआ। कृष्ण जैसे व्यक्ति की सहायता और आशीर्वाद प्राप्त है। इतनी सामर्थ्य रखते हुये भी तुम सहज रूप से ये बारह वर्ष निकाल रहे हो। तुम्हें कहीं ऐसा नहीं लग रहा कि मैं सम्राट था और यहाँ ऋषियों के बीच में किस प्रकार का जीवन बिता रहा हूँ। तुम्हें अपने जीवन के प्रति किसी भी प्रकार की सोच नहीं है। मैं तो इतना कहता हूँ कि - ''नैषे बलस्य इति चलेत् धर्मम्।'' अहं बलस्य एषे- मैं बल का सम्पूर्ण अधिकारी हूँ। इति अधर्मम् न चरेत्। द्रोपदी भी समझाती है भीम भी समझाता है। उनका समझना अनुकूल भी है। पर दोनों को सन्तुष्ट रखते हुये भी समय निकाल रहे हो। तुम्हारे सारे भाई तुम्हारे अनुकूल हैं। कोई तुम्हारा तिरस्कार नहीं करता। वे मुझे राम के अलावा कहीं नहीं दिखता। जिस वाल्मीकी ने राम को जो ये यश, गाया ऐसे हम अलग - अलग संदर्भ देखे तो किसी न किसी रूप में इस प्रकार की प्रतिष्ठा करने वाले लोगों का समुदाय मिलेगा। इसी से हम वाल्मीकी के विषय में सोच सकते हैं। वाल्मीकी के प्रश्न देखें रामायण का आधार क्या है? भगवान की कृपा से अचानक नारद जी ने अपनी योजना कही है। वो वाल्मीकी के आश्रम में आ जाते हैं। वाल्मीकी उनका जो आदर सत्कार होता है वो सब करते हैं। जब बैठ जाते हैं तो जो सामान्य बातचीत जो आती है तो ऐसे लोग अपने से श्रेष्ठ आने वाले व्यक्ति के सामने कुछ न कुछ शास्त्रीया चर्चा कर ही देते है। वाल्मीकी ने वो शास्त्रीया चर्चा भी नहीं की। वाल्मीकी नारद से एक प्रश्न करते है कि ऐसा नर कौन है, वहाँ पुरुष शब्द भी नहीं है, नर शब्द है। नर का मतलब सामान्य मनुष्य। पुरुष के तो बहुत व्यापक अर्थ हैं । सारे विश्व का कर्ता, धर्ता, नियंता एक मात्र है तो पुरुष है। ये हमारा वेद कह रहा है स्पष्ट रूप से कह रहा है। तो नर कौन है तो बताया जिस नर में सारे गुणों में स्वाध्याय निष्ठ भी है। सारे वेदों का वेदांगो का प्रकाण्ड पण्डित भी है और अपने धनुर्वेद में कुछ बराबरी न करे ऐसा भी होवे। एक एक व्यक्ति जिससे मिलने को आये ऐसे होता है जैसे नदियों को समुद्र में जाकर शांति मिलती है। इस प्रकार वाल्मीकी ये बात कहता है तो आप सोचिए नारद उत्तर में क्या बोलते है। उन्होंने कहा तुमने बात बडी अच्छी पूँछी। लोगों में मेरी दृष्टि में इस वक्त कौन ऐसा मौजूद हो सकता है वो मैं तुम्हें बता रहा हूँ और वाल्मीकी ने सोलह ही गुण बताये थे नारद ने सत्तर बताये गये थे। इस प्रकार के गुणों वाले अपने पुत्र राम को देखकर दशरथ ने सोचा मैं इसका युवराज के रूप में अभिषेक कर दूँ।

इस प्रकार वाल्मीकी ने राम का बचपन का सारा काल ङ्क बाल भुलाकर के यहाँ पहुँचाकर के कहा कि इस गुणों से युक्त व्यक्ति है ङ्क रामो नाम जनै॰श्रुत॰। आज भी लोगों में वो राम इस नाम से प्रसिद्ध हैं। अब आप सोचिये पूछँता है

उसे दोगुना उत्साह देकर के ये व्यक्ति उत्तर देता है। इसका मतलब नारद को कितनी प्रसन्नता हुई होगी कि वाल्मीकी ने कितना सहज प्रश्न किया और उत्तर क्या दिया- ऐसे गुणों से युक्त नर यही है। वो भी नर शब्द का ही प्रयोग करते है तो अवतार को लेकर नहीं बैठता। वाल्मीकी किसी धर्म के महान् व्यवस्था करने वाले धर्मात्मा को लेकर नहीं बैठता। वाल्मीकी ने एक मनुष्य में एक सहज मनुष्य में जो किसी विशेष वर्ग के साथ प्रमाणित कर देते है। ऐसे भी व्यक्तियों में कई व्यक्तियों मे की व्याख्या हो सकती है। ऐसे हजारों व्यक्तियों रहे होंगे तभी तो वाल्मीकी को लगा कि इस समय कौन है जिसका मैं चुनाव करुँ। इसका मतलब कुछ कहना चाहते थे। वाल्मीकी की इस बात को समझकर नारद ने जिस प्रकार उत्तर दिया ङ्क तो नारद के जैसे मुझे राम का ही चरित्र कहना चाहिये ऐसा कुछ विचार कर लिया। अब मैं यही कहना चाहता हूँ कि आज जब हम रामायण की बातचीत करते है तो कहते है कि आदिकाण्ड रामायण मे नहीं था बालकाण्ड था। दूसरा व्यक्ति कहता है कि रामायण केवल सातवां काण्ड रामायण में नहीं था जिसे उत्तरकाण्ड कहते है। तीसरा व्यक्ति कहता है कि रामायण केवल पाँच ही काण्डों की थी क्योंकि उसमें कहीं भीष्मावतार का नाम नहीं आता है तो राम मनुष्य थे तो वाल्मीकी की रचना यही हो सकती है। अब देखने की दृष्टि क्या हो गई। अवतार नाम आ गया तो वाल्मीकी वाल्मीकी नहीं रहे बल्कि वाल्मीकी कवि हो गये। अब ये वाल्मीकी केवल हमारे जो बहुत ही कुछ विना सोचे समझे अपना लेने वाली उन पारम्परिक कथाओं के आचार्य बन गये। पर अब ये कहकर रामायण की आलोचना करने लगते हैं। उन्हें ये होश नहीं कि रामायण किस काल की थी ? किस व्यक्ति की थी। रामायण का सम्पादक कौन था? अरे पहले ये तो देख लो रामायण किसकी है और किसकी नहीं। वो तुम्हारे इन भाटों की तरह नहीं है। इन चारणों की तरह से नहीं है। इन कवियों की तरह से नहीं था। जिसको थोडा सा आदर दिखाई दे रहा हो, थोडी सी सम्पदा दिखाई दे रही हो, और शिष्टता कर रहा हो। जिसके चरणों में आकर वाल्मीकी जैसे व्यक्ति गिरते थे। उस राम की प्रशंसा वाल्मीकी कर रहा है तो वाल्मीकी राम की शरण में है या राम वाल्मीकी की शरण में है। हम अपने बच्चों की प्रशंसा करते है । अपने छोटों की प्रशंसा करते है । अपने शिष्यों की प्रशंसा करते है। ये प्रसिद्ध है ङ्क मनुष्य सर्वत्र जय की आकांक्षाक करते हैं पर वो अपने पुत्र, अपने शिष्य से पराजित हो। इसका मतलब पराजय आकांक्षिते का ये अर्थ नहीं है इसका अर्थ है जितना मैं हूँ मुझसे सवाय मेरा शिष्य हो ये गुरू की गरिमा थी या मेरे बेटे निकलें ये पिता का पितृत्व था। ऐसी स्थिति को दृष्टि में रखकर भगवान वाल्मीकी ने जो चरित्र चित्रण किया है आप एकांगी दृष्टि से नापने की और देखने की चेष्टा ना करें क्योंकि मैंने आपको गतबार बताया कि वाल्मीकी साक्षात च्यवन के पुत्र थे। भृगु ऋषि के पौत्र थे। ब्रह्मा के प्रपौत्र थे। वो इतना प्राचीन व्यक्ति। अब हम इसका उपयोग भूल जाते है। यदि हम जानते होते तो कमी नादान लोगों की तरह नहीं बोलते कि वाल्मीकी एक डाकू थे और तुलसीदास जैसे व्यक्ति कहते हैं ङ्क

''उल्टा नाम जगत जो जाना, भये वाल्मीकी ब्रह्म समाना''॥

जो व्यक्ति राम - राम नहीं बोल सकता। मरा - मरा बोल रहा है। मरा मरा बोलकर भी ब्रह्म तुल्य बन जाता है वो राम। अब पूँछिए किस राम की प्रशंसा कर रहे है? कैसी प्रशंसा कर रहे है? वाल्मीकी के विषय में इतनी आसक्ति पैदा कर गये। यानि मैं इन महापुरुषों के विषय में तुलसी ने जो कुछ दिया है वो जिस युग में उनकी देन है और वाल्मीकी के चरित्र को देखने के लिए कोई नाम तो सुनने को मिले। पर इसका मतलब ये नहीं कि भक्ति के नाम पर अंधे हो जायें और जो चाहे हो कह दें। बिल्कुल वाल्मीकी ने ऐसी भक्ति राम के प्रति कुछ ज्यादा ही अटूट दिखाई है। पर इस भक्ति के इस धर्म के इस अवतार वाद के उस चक्र में वाल्मीकी बिल्कुल नहीं पडे है। राम को विष्णु कहने में कोई दिक्कत नहीं हैं। ना कृष्ण ही। विष्णुना सदृश वीर्ये नारद जी मैं इस व्यक्ति की बात करन चाहता हूँ जिसने इस गुणों के साथ ङ्क साथ विष्णु के समान शक्ति हो। कैसी विष्णु के समान काँप उठे वो व्यक्ति तो उन्होंने एक एक सामान्य बात में व्यक्ति के गुणों कि जो एक अन्तिम सीमा है उसको छूने वाले मनुष्य के विषय में बात की है। ऐसे वाल्मीकी के विषय में वाल्मीकी के इस रामायण को हम देखें तो हमने फिर अधूरा अध्ययन किया। वाल्मीकी को हम आदिकवि मानते है। रामायण को आदिकाव्य मानते है। अगर किसी ने जिंदगी में रामायण अच्छे ढंग से पढी होती तो वो आदिकाव्य कहने का अपराध नहीं करता। ये अपराध है। आप रामायण को पढिए। जिस वक्त भगवान राम ज्ञात करते है कि ये दो बालक इस प्रकार कहें तो अद्भुत रुप से भगवान वाल्मीकी की रचना को गाते हुए घूम रहे थे। भले ही कानों में दो चार शब्द पडे मैं इनको अपने घर बुलाकर बातचीत करना चाह रहा हूँ तो अपने भाईयों से कहकर पहले लक्ष्मण आते है जाओ उन्हें बुलाकर लेकर आओ कौन है कौन नहीं है? वो लोग उन्हें लाते है। वाल्मीकी ने उन्हें बताया था तुम- इस यज्ञ में जा रहे हो उस यज्ञ में राम भी तुम्हें बुला सकते है। वो राजा है। राजा सबका पिता होता है तो उन्हें पिता मानकर राजा मानकर के ये कभी मत सोचना कि राजा के सामने हम कैसे जायें? तो हम कोई उद्दण्डता नहीं करेंगे। किसी भी प्रकार की हम ऐसी कोई बात नहीं करेंगे तो राम के पास को आते है तो राम उनसे बातचीत करते है और वानगी के रूप में एक दिन की कथा भी करवा लेते है। एक दिन की कथा कहने पर दोनों बालक क्या कहते है सुनिए - हमारे गुरू ने सारे वेद - वेदांग सारे शास्त्र पढाने के लिए नहीं है। आप ये वादा कीजिए एक निश्चित समय प्रतिदिन हमें देंगे और आप सुनेंगे। राम ने कहा मैं यही करूँगा तो उन्होंने पहले दिन के 16 - 17 सर्ग सुना दिये। अब वाल्मीकी के ये सारे सर्ग सुनने के बाद राम ने देखा ये तो बडी विलक्षण वस्तु है। उन्होंने जितने भी कार्य किये मर्म को समझने वाले विद्वान के उनको बुलाया। अरे जब कार्य ही नहीं किये तो विद्वान कहाँ से आ जायेंगे और फिर मर्म समझने वाले। जो सारे ऐतिहासिक हैं उनको बुलाया8 महान विद्वानों को बुलाया, वेद वेदांगो में निपुण ऐसे सैकडों लोगो के बुलाने की व्यवस्था करने वो उन दोनों बच्चों से दूसरे दिन से रामायण सुनने शुरू कर देते है।

ये भगवान वाल्मीकी का स्पष्ट कथन है। जरा सोचिए जिसके क्रम बद्ध रूप में चर्चा हो रही है उस वाल्मीकी की रामायण के विषय में हमारे क्या विचार है कि भगवान राम का तो जन्म ही नहीं हुआ था उससे पहले ही वाल्मीकी ने रामायण तैयार कर दी। ऐसा बोलते है सामान्य व्यक्ति। आपकी अगर क्षमता है उन्हें अगर प्यार से समझा सकते है भई ये आपने बडे लोगों के मुँह से सुना है तो कोई बुरी बात नहीं है किंतु इतिहास की दृष्टि से शक्ति की दृष्टि से वाल्मीकी से पूँछ करके आगे बढने की बात कर रहे है तो मैं इसी बात पर कहना चाह रहा हूँ कि जिन्होंने कभी मूल रामायण को नहीं पढा। रामायण के प्रारम्भ के बालकाण्ड के शुरू के चार सर्ग तक नहीं पढे वो व्यक्ति कहते है वो डाकू था। वो व्यक्ति कहते है उसके लिए इतना तो कर ही सकते है। मरा को राम वोल सकता है उसके लिए इतना तो कर ही सकते है। मरा को राम तो बनाया जा सकता है पर जो राम बोलने लायक नहीं है या वो मरा - मरा कहता है। वो मरा - मरा किसके लिए कह रहा है। वो राम कौन है जिसको जानता तक नहीं है। क्या हम ऐसी अंधी और गहरी भक्ति की बात करत है हम लोगों में। क्या हमारी वास्तविक स्वरूप ये है। मन में भक्ति के अलावा कुछ है ही नहीं। मैं कह रहा हूँ कि रामायण की भक्ति का अर्थ क्या है? महाभारत की भक्ति का अर्थ क्या है? कालिदास के रघुवँश की भक्ति का अर्थ क्या है। हमारे शास्त्रों की भक्ति का अर्थ क्या है? अरे भक्ति के बिना भगवान नहीं और भगवान के बिना भक्ति नहीं। भक्ति शब्द हमारे लिए साधक नहीं है भक्ति हमारा सबसे बडा साध्य है। ईश्वर के प्रति जिसनेक हमें सब कुछ दिया है, अगर हमारी सच्ची निष्ठा नहीं है तो भक्ति भक्ति नहीं है। राम नाम का दुपट्टा ओढकर दुनिया को धोखा देने वाले ये भक्त हैं । जो व्यक्ति राम नाम को याद करके दुकान पर बैठता है और शाम को उठता है। इसके यहाँ एक पैसा पाप का नहीं है वो भक्ति है। हमने इतने हजार जप कर लिए चौबीस लाख गायत्री के जप कर लिए और चौबीस लाख में आप में ये क्षमता नहीं आई की एक भंगी को छूने के बाद आपको भ्रष्ट होकर स्नान करना पडेगा। आपके चौबीस लाख गायत्री मंत्र से भंगी को ब्राह्मण हो जाना चाहिए। नहीं हुआ वो।

फिर क्या आपकी गायत्री में इतनी सी शक्ति है। सोचिए हम गायत्री को कहाँले जा रहे है? वैदिक मंत्र को कहाँ ले जा रहे हैं। क्या अर्थ कर रहे हैं, क्या अर्थ नहीं कर रहे है। भक्ति भक्ति इस भक्ति के अंधे नाच में हम शबरी के झूठे बेर राम को खिला रहे हैं। यानि राम कितने विनम्र थे कितने उदार थे तो क्या उदाहरण झूठे बेर खाने में ही है। वाल्मीकी ने इसी शबरी के लिए प्रयोग किया है- नित्यं विज्ञानेषु बहिष्कृता ये उन ऋषियों की सेवा में थी जिनका ज्ञान विज्ञान से एक क्षण के लिए भी वियोग नहीं था और ये वो महिला के मन में आया कि अगर अच्छे से अध्ययन किया और उस महिला के मन में आया कि अगर ऐसा व्यक्ति है और राम की प्रशंसा कर रहे है तो मैं भी उस राम को देखकर के शरीर छोडूँगी हे भगवान आपकी कृपा हो कि मेरे जीते जी आपके दर्शन हो जाएँ। अगर ये सोचती हे कि राम को देखकर दुनियां को छोडूँगी हे भगवान आपकी कृपा हो कि मेरे जीते जी आपके दर्शन हो जाएँ और वो कह रही है कि नहीं राम के दर्शन

करके ही शरीर छोड़ूँगी। जिसे सामान्य बूटी जिसे होश ही नहीं कि मैं क्या खिला रही हूँ। ये भक्ति का नाम कितना भयंकर है। राम उसके आश्रम में आते है राम उसी से उसका आराध्य का आदर करता हो, गुरूजनों का आदर करते हैं। जब सारी बात हो गई सीता, को आशीर्वाद भी दे दिया, सन कुछ होता है और अंत में कहते है राम वास्तव में दो गुरू आपके दर्शन करके अपना शरीर छोडा है उसी वक्त से मेरी इच्छा भी हो रही थी मैं भी अग्नि प्रकट करके शरीर को उसी में भस्म करूँ। उस भक्ति में क्या - क्या रख देती है और साथ में यह जोड देते है कि लक्ष्मण थोडा नालायक था। राम चाहे झूठे बेर खाएँ जरूरी थोडे ही है मैं भी खाऊँ और उसने वो बेर फेंक दिये। इससे हनुमान जी को संजीवनी लानी पडी लक्ष्मण को जीवित करने के लिए। पता नहीं कहाँ की बात जोड देते है। ईश्वर ने बुद्धि दी है और आपका तो धर्म है प्रतिदिन हर व्यक्ति यज्ञोपवीत करने के बाद यज्ञ न करे वो गायत्री मंत्र का जाप करते हैं।गायत्री मंत्र का अंत होता है ''धियो यो न प्रचोदयात्'' वो परमात्मा हमें सत्कर्म करने वाली शक्ति प्रदान करे। जिस परमत्मा का इतनी निष्ठा से हम दिन में तीन बार नहीं तो दो बार , दो बार नही तो एक बार कम से कम जप करते हैं। अपनी परमपराओं को अनुकूल के वो आप को इतनी सी बुद्धि नहीं बनी कि हम क्या कहने जा रहे हैं। क्या हमें कहना चाहिए। वाल्मीकी के चरित्र को रामायण के चरित्र को पूरा करना पर मैंने आपको एक शवरी का नाम देकर बताया कि वाल्मीकी नया कहना चाह रहा है और इससे दूसरी बात सुनिये येव वाल्मीकी नहीं कर रहे है वाल्मीकी वही कह रहे है जो कुछ उन्होंने रामायण के विषय में नारद जी के मुख से सुना। पहली बात दूसरी बात वाल्मीकी जिस रोज नारद से यह बात चीत करते है ये उनका दोपहर का समय था। नारद जी से बात की। नारद जी ने बहुत सुंदर सौ श्लोकों में, सौ उसको पकड लिया। अब वाल्मीकी के है उन्होंने राम की सारी बातें बता दी। वाल्मीकी ने उसको पकड लिया। अब वाल्मीकी अपने मध्याह्न काल के लिए निकलते है नहाने के लिए। अपने शिष्य भरद्वाज से नहाने के लिए कहत है। नदी में जाते है। कुछ दूर जाने पर वाल्मीकी के मन में आया भरद्वाज नहाने के लिए ये जगह ठीक है। वहाँ उस शब्द के लिए तेज शब्द का प्रयोग होता है। तेस को हम घाट कह सकते है। पुष्कर में कितने घाट में है इसका मतलब पुष्कर में कितने तीर्थ है। ये तीर्थ ठीक है। मैं यहाँ बैठकर नहाता हूँ। मेरी धोती मुझे दे दे। वो दे देता है। उसी वक्त देखते है कि अचानक किस प्रकार से निषाद ने बाण चलाकर के उस क्रोञ्च के जोडे में पुरुष को मार डाला। उसी वक्त वाल्मीकी के मुख से तत्काल शाप के रूप में एक वाक्य निकल पडता है -

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समा।
यत्क्रौञ्चमियुना देक, मवधी काम मोहितम।।''

अरे निषाद तुझे कभी वो प्रतिष्ठा नहीं मिली जो मनुष्य को मिलती है। निषाद को प्रतिष्ठा की बात वाल्मीकी कर रहे है। इसका मतलब निषाद में ज्ञान विज्ञान जैसी चीज होती तो उस प्रतिष्ठा की बात कहाँ करता है। निषाद के लिए पर

तुच्छ जो कर्म करता है उसके लिए तो इसका मतलब तूने अपने कर्म की निष्ठा से एक ऐसी निष्ठा को खो दिया जो कह तो दिया, करूणा के आवेश में मुँह से निकल तो गया पर एकदम से उन्होंने सोचा कि मैं क्या बोल गया। क्या मैं किसी को इस प्रकार का दण्ड देने का अधिकार रखता हूँ और बोलना तो गद्य में ही था एक पद्य बोल पद्य क्यों निकला मेरे मुँह से ? उसको गर्व नहीं था कवियों की दृष्टि से तो पूँछा स्नान हुआ निकला, भरद्वाज और भरद्वाज के साथ और भी शिष्य थे। उनके सामने बोले कि मैं क्या बोला गया? तो भारद्वाज बोले ङ्क मुझे लगता है आपने ठीक ही बोला। गद्य नहीं है बस पद्य है वो आपका काम नहीं है। आपने बोल दिया चाहिए बोल दिया। आप इतना क्यों सोचते है प्रतिष्ठा में। पर वाल्मीकी जैसे व्यक्ति के मन में चैन नहीं मिला। आश्रम में आये। अपना जो दैनिक दोपहर का कर्म किया वहाँ ब्रह्मा आ गये। अब आप सोचिए यहाँ सब झूठे है। ब्रह्मा भी आ जाता है। नारद भी आ जाता है। इसका मतलब है आप आराम से पींगा पंती या पुराणपंती या झूठ बोलते है जिसको आप झूठ के नाम से कुछ भी कह लेते है वो रामायण शुरू से सारी ऐसी है। तुलसीदास जी इसे सिद्ध कर देते हैं। रवैर छोडिये मैं बार ङ्क बार नाम नहीं लूंगा तो वाल्मीकी ने देखा उनका स्वागत सत्कार किया, उनको आसन दिया। जब उनको आसन दे दिया जब खडे है तो कहते है बैठो वाल्मीकी और अपने पास वाले आसन पर बैठने को कहते है वो बैठे गये। अब उनसे बोले तुम क्या सोच रहे हो? मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा ध्यान ये सब कुछ करते हुय भी कही और जगह है तो उसने कहा तुम ये सोचो कि मैंने तुमसे क्या सोचने के लिए कहा है। मेरी इच्छा थी कि तुम इस प्रकार रघुवीर के चरित्र को तैयार करो जैसा तुमने नारद से सुना है तो वाल्मीकी ने अर्थ की बात की पुष्टि करता है जैसा नारद से सुना है वैसा ही चरित्र तैयार कर। राम का जो अत्यंत सुंदर चरित्र है तो आरम्भ से अंत तक उनके चरित्र को लोगों के सामने रख तो वाल्मीकी ने सोचा कि जब ब्रह्मा बैठकर कह रहे है कि मेरी इच्छा से तेरे मुख से इस प्रकार की वाणी निकली है और मैं चाहता हूँ तो उसी वाणी में रामायण को तैयार करे तो अब मुझे सब कुछ छोड देना चाहिए। जो जबरदस्त चीज जो उनके वैचारिक दृष्टि से छा गई थी उसको एक क्षण में निकाल दिया और उसी समय संकल्प कर लिया अब मुझे राम का चरित्र गाना है। ये हुई इस विषय की बात पर हम थोडा सा इस विषय को भी देख लें कि ब्रह्मा ने क्या कहा ? हमारे उस वक्त भी ये चीजें चल पडी थी शायद कि कवि की कल्पना में ही सबकुछ होता है कल्पना जरूरी नहीं है कि सत्य ही हो। वाल्मीकी को भगवान ब्रह्मा का वरदान है देखो तेरे इस कार्य में एक भी बात मिथ्या नहीं होगी।

ये वाल्मीकी को ब्रह्मा का दिया हुआ आशीर्वाद है। हमारे पास तीन चार है जिन्होंने वाल्मीकी बनकर के रामायण लिखी है। इसलिए मुझे अधिक बोलना पड रहा है। जैसे ही भगवान ब्रह्मा गये वाल्मीकी डटे और अपने शिष्यों से कहा - मुझे इस आज्ञा का पालन करना है और अब वाल्मीकी एक नये तप में बैठे। राम ने क्या क्या किया है, क्या क्या सोचा है। उनके प्रति लोगों ने क्या सोचा है, क्या किया है। ये सारी बातें जब तक मैं क्रमबद्ध नहीं देख लूँगा

मैं कुछ नहीं करूँगा। उन्होंने उन सब चीजों को अपने योग बल से उसमें समय लगा दिया। जब एक - एक चीज देखकर के आश्वस्त हो गये तब उन्होंने रामायण का संकल्प किया। जहाँ हम इस रामायण को देखते है उसके बालकाण्ड का चौथा ही सर्ग देखते हैं । चौथे सर्ग का का पहला वाक्य है- ''प्राप्त राजस्य रामस्य वाल्मीकी भगवान ऋषि चकारः चरितं सुखद्म।।'' जिसने राज्य प्राप्त कर लिया। राज्य प्राप्त क्र लिया का क्या मतलब राम को जो वनवास पूरा हो गया और आज आकर के उन्होंने राज्य प्राप्त कर लिया। इसका मतलब स्पष्ट होता है कि भगवान वाल्मीकी के रामायण के गाने लिखने और बनाने के पूर्व राम पैदा नहीं हुये थे। अरे राम न जब इतना जीवन गुजारा दिया उस वक्त ब्रह्मा का आशीर्वाद पाकर नारद का आशीर्वाद पाकर और उसके लिए स्वयं ने तपो योग से काफी परिश्रम करके फिर राम के चरित्र को पद्यबद्ध करने का यत्न किया है। क्या हम वो कर रहे है? आज हम पाँच ङ्क दश रामायण देख लेंगे और एक दूसरे के बीच में सम्पर्क नहीं कर पायेंगे। वास्तव में भगवान वाल्मीकी ने चरित्र से बाहर कौन गया ? यदि चरित्र के बाहर गया है तो कैसे गया? किस रूप में गया। आपको आश्चर्य होगा मुझे वाल्मीकी रामायण में कालिदास दूसरे क्रम वाले कालिदास। कालिदास तीन थे। ये कालिदास जिनकी में चर्चा कर रहा हूँ दूसरे क्रम के कालिदास हैं और ये व्यक्ति जो है रघुवंश के कर्ता के रूप में ही प्रसिद्ध हुये थे रघुकर्ता। इनका खुद का निजी नाम था हरिसेन। तो रघुवंश के कर्ता हरिसेन जिस प्रकार से रघुवंश को व्यक्त करते है उसमें काव्य की गंध तक नहीं आती। ऐसा लगता है जैसे व्यक्ति अपने आप को बार - बार समझा करके इतिहास से बाहन ना निकल जाऊँ एक भी बात नहीं कहता है।

माफ करिये में एक दो उदाहरण देकर बात समाप्त कर रहा हूँ इस विषय की कि वाल्मीकी न बताया है स्पष्ट नहीं कहा पर अपने कथन वद्ध है कि दशरथ ही अपने इन चारों बेटों के आचार्य थे। चारो वेदों के आचार्य, और युद्ध जो क्षत्रियों का सबसे बडा धर्म है उसका जो वेद है जिसे हम धनुर्वेद कहते है उसके आचार्य दशरथ है। दशरथ ने ही इन चारों की कुशलता अपने ही द्वारा पढाते हुये अध्ययन काल में देखी है। वाल्मीकी ने बिल्कुल स्पष्ट कहा पर इतना स्पष्ट नहीं कहा। जो मैं बोल रहा हूँ उसको टटोलना पडेगा। तो ये तो एक बात हो गई। अब आप सोचिए कि वाल्मीकी कह गये है कि इन सारी वालों को इस प्रकार से देखकर के ये सब कुछ हुआ है और हम कह रहे है कि राम के पैदा। अब ये वाल्मीकी का दोष है या आपका दोष है और अगर इतिहास कार गडबड करते है तो वो अपना काम क्यों नहीं समझते ? हमारा धर्म है कि हम अपने आप को बिल्कुल सत्य के मानने वाले हो। राम के लिए एक ही जगह सब है ÷सत्य धर्म÷। जीवन में सबसे बडा धर्म सत्य है। सत्य धर्म है। धर्म को जिसने एक पल के लिए नहीं छोडा। जो सत्यवादी रहा है उस व्यक्ति के जीवन को हम सामान्य चीजों से देखें तोडे सोचे फिर देखें फिर विश्वास कीजिये रामद्वापुर युग में हुये है और उन्होंने वाल्मीकी ने साठ काण्डों में आदि से अंत तक पाँच सौ सर्ग में और 24000 पद्यों मे रामायण को तैयार

किया। अब आप मान लीजीए ये वाल्मीकी ने तैयार किया है। पर आप रामायण समझ ही नहीं पायेंगे। क्योंकि वहाँ पर ऐसा वाक्य भी है कि आदिकाव्य रामायण हमें जब वाल्मीकी ने सुनाया था। अरे पुराकाल मे वाल्मीकी ने सुनाया था ये तो वाल्मीकी का वाक्य हो नहीं सकता। तो आप इसी के आधार पर आदिकवि, आदिकाव्य, पुराकाव्य कहते है। पुरा का अर्थ क्या लेते है भगवान जाने क्योंकि आप जानते है नहीं है कि भगवान वाल्मीकी की इस रचना का उनके कृति के पूरे होने के पश्चात् समाज में लाकर प्रस्तुत करने के लिए ग्रंथ रूप को सम्पादित की दृष्टि से देने वाले व्यक्ति कौन है। आप इसका सबसे पहला श्लोक लीजीये जो नारद का उपदेश है -

तपस्वाध्याय निर्धर्‍ तपस्वीवां विदाम्बरम्।

नारदं परिपृष्ढ्‌य वाल्मीकी मही पुंगव ।।

मुनि श्रेष्ठ वाल्मीकी ने ऐसे महान्‍व्यक्ति नारद जी से प्रश्न किया। ये वाल्मीकी तो नहीं करेगा अपने लिए। मुनिश्रेष्ठ मैंने फिर यहाँ तृतीय पुरुष में क्यों रखा- 'अहम्' ही ले लेता। इसका निश्चित रूप से रामायण को प्रस्तुत करने वाला प्रस्तोता कोई और है और वो प्रस्तोता को है जो वाल्मीकी को नारद आदि की तरह से ही कोटि में लेकर चलने वाला है वाल्मीकी उसके गुरू है और ये गुरू कौन है, वाल्मीकी ने बता दिया है। जब द्वारा नहाने के लिए जाते है और कहते है भरद्वाज ये मेरी शादी पकड चल नहाने चलते हैं। भरद्वाज उनका शिष्य है। अब आप सोचेंगे भरद्वाज कौन है। होगा कोई प्रयाग तीर्थ का चलता है फिरता मुनि। प्रसिद्ध हो गया होगा। आप जब तक इस इतिहास को लेने के लिए भारतीय वाङ्मय को एक निष्ठा के साथ ज्ञान की पिपासा के साथ नहीं पलटेंगे तो भरद्वाज साक्षात् बृहस्पति का पुत्र है और बृहस्पति अङ्गिरा और आङ्गीरस सप्त ऋषियों में एक भृगु भी है और एक अङ्गिरा भी। भृगु के वंशज वाल्मीकी जैसे लोग हैं और अङ्गिरा के वंशज ये सारे भरद्वाज जैसे लोग है। ये सभी ब्रह्मा से सीधा सम्बंध रखने वाले है। इनके कालक्रम को इनको समझने के लिए सारे पुराने इसी बात कह रहे है महाभारत इन्हीं बातों को कह रहा है। महाभारत में रामायण में एक ही बात को स्पष्ट कहा गया है ङ्क एक ही भाषा किस काल में थी? आदि में । अरे वेद भी कहता है। वेद का अपना जो सबसे प्यारा सूक्त है जिसको हमें बहुत ही सुंदर ढंग से देखने की भूमि सूक्त, पृथ्वी सूक्त। ये अथर्ववेद के 12 वे काण्ड का पहला ही सूक्त है। इसमें एक जगह कहते है कि इस भू माता की गोद में ''नाना धर्माणः नाना वाचः'' नाना प्रकार के धर्म वाले और नाना प्रकार की वाणी वाले रहते है। जब वेद में अनेक वाणी आ गई है तो आप किस कल्पना के आधार पर कह रहे है कि वाणी एक थी। वो अब इतिहास को ढूँढना पडेगा। आज की आपकी जितनी भी प्राकृतिक व्याकरण है एक स्वर से सम्पूर्ण और पूर्ण निष्ठा के साथ कह रहे है - ''प्रकृतिः संस्कृत ततः आगतं प्राकृतम्'' प्रकृति संस्कृत का नाम है। संस्कृत का मतलब जिसमें प्रकृति - प्रत्यय आदि स्पष्ट हो जायें और उस

संस्कृत से प्राप्त होने से संस्कृत को प्रकृति मानने से भाषा का नाम हो गया प्राकृत। अब आप देखिए संस्कृत को हम आत्य मानकर चले तो इतनी प्राकृत क्यों हो गई ? इसका मतलब प्रकृति अपने भेद है तो हम यहाँ पर देखते है हमारी अनेक भाषाएँ आ जाती है। प्रशासी भाषा भी आ जाती है। ये वाल्मीकी रामायण महाभारत स्पष्ट कहते है कि - जब चारो वर्णों में कुछ शिथिलता आई उसको हम छोड ही बैठे तो उसमें अंतिम समाप्ति मनुष्य की पिशाच पर हुई है। कोई भूत प्रेत या मरने वाला नहीं है पिशाच है। उस पिशाच की भाषा हमारे भाषा विज्ञान ने पैशाची भाषा स्वीकार की है। वाल्मीकी रामायण महाभारत का इन छोटी - छोटी बातों का चारों ओर से हम ध्यान नहीं देंगे और पाँच पृष्ठों विसंगति होगी तो आदि का अर्थ अब समझ लीजीये - नारद ने कुछ कहा है वो वाल्मीकी के लिए आदि है। वो ठीक है। नारद ने कहाँ तक कहा है कि जब दशरथ ने सोचा कि मैं राम को शासन दे दूँ और उनको वन में जाना पडा। बालकाण्ड का नारद जी ने केवल परोक्ष वर्णन कर दिया है। राम की पैदाइश बगैरा का। पर ये बता दिया दशरथ अपने योग्यतम पुत्र को क्या आयु की दृष्टि से बडा होने की दृष्टि से श्रेष्ट था उसको युवराज बनाना चाहा फिर जो स्थिति पडी इससे उनको वन में जाना पडा। वन में वापस चले आये 14 वर्ष पूरे करके। उनका राज्याभिषेक हो गया। जब ये इतनी बातें वाल्मीकी से कही गई नारद जी के द्वारा। इसका मतलब नारद जी के मुख से वाल्मीकी ने राम के राज्याभिषेक की बात को सुना है। वो महापुरुष थे सब कुछ था। पर इस दृष्टि से वर्णन करने योग्य चरित्र नायक भी हो सकते हैं। ये वाल्मीकी को बुद्धि मिली तो उन्होंने अक्षरशः अनुवाद किया। ये हो गया वर्तमान वाल्मीकी का अथवा अतीत को कहना। पैदा होकर के राज्य प्राप्ति करने तक सारा भूत है और भगवान वाल्मीकी ने नारद के कहे अनुसार भूत को भूत लिया है। ये रामायण का लोगों का गलत निर्णय है राम के पैदा होने से पहले कर दिया था। भूत का अर्थ है विद्वान समझ ले इसको कि भूत का क्या अर्थ है? अब वाल्मीकी वर्तमान में आ रहे है। वर्तमान में आ रहे है तो वाल्मीकी कहते है - राम का शासन ऐसा है। कैसा है -

नार्यश्च अविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रता।
न पुत्रः मरणं केचित् रक्षान्ति पुरुषाः क्वचित्।।

नारियाँ सारी की सारी अविधवा होंगी। अब सोचिए जिनकी माताएँ ही तीनों विधवा है वहाँ हम नारियों की अविधवा होने की बात कर रहे है तो ऐसी गंदी ऐर तर्क करने के लिए और इस तर्क को सब कुछ प्रतिष्ठा मान लेने वाले लोग उनको नमस्कार है। आप कभी मानेंगे अपने तय कर लिया है - हमें दोष देखने हैं। ईश्वर आपको धन्यवाद दे कि आप इस दोष को बनाये रखं और जीवन में इसी प्रकार से आगे चले जाएँ तो नरक के पात्र तो नहीं होंगे। पर दूसरा फिर क्या हुआ - ''आविधया नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रता'' अर्थात् आप स्त्रीयों के लिए पतिव्रता का ढोंग कर रहे हो और

सीता एक व्यक्ति के कहने से राम ने सीता को फेंक दिया। छोड दिया। कभी सोचो क्या - क्या किया, क्यों किया, कैसे किया और सीता की अनुमति कहाँ तक थी। ये हम पढने का कष्ट नहीं करेंगे। शास्त्रार्थ करेंगे मैं दावे के साथ कह सकता हूँ राम ने सीता का त्याग नहीं किया था। आपने बहुत सुंदर किया। आपका वेद हमें मान्य है। हम उनको प्रणाम करते है पर इसका मतलब आप वाल्मीकी को धक्का लगाने वाले हो गये। वाल्मीकी कह रहा है किया आप कह रहे है नहीं किया तो वाल्मीकी को झूठा कह दीजिए या अपने आप कोइ उनसे अच्छा दृष्टा कह दीजिए। या आप बडे दावे के साथ बात कर रहे है और जो कह रहे है वो अपनी कल्पना से कह रहे है या जो सत्य घटा है उसे कह रहे है। इन सब चीजों को आप नहीं देखेंगे तब तक सात काण्ड पाँच सौ सर्ग चौबीस हजार पद्यों वाली बात आपकी समझ में नहीं आयेगी तो भरद्वाज उन ऋषियों में है जो भगवान वेदव्यास से पहले दो बार व्यास बन चुका है। आप कल्पना करेंगे भगवान वाल्मीकी से पहले के व्यास है। अब आपको एक छोटी सी बात दूँ अपने भगवान वेदव्यास अठ्ठाईश वे है। उन अठ्ठाईश वेदव्यासों में भगवान वाल्मीकी 24 वे व्यास है। 25 वें है वशिष्ट जी के पुत्र शक्ति 26 वें है शक्ति के पुत्र पराशर 27 वें है पराशर के भाई जतुकर्ण और अठ्ठाईश वे है पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास हैं। भगवान व्यास ने सारी शिक्षा अपने चाचा से ली है। व्यास का गुरू है चाचा। व्यास के विषय में ये हम कहां जानते है इसलिए मैं कह रहा हूँ कि जितने भी पुराण है ये सारे न भगवान व्यास के हैं। ये व्यास के शिष्यों ने जिनकी तैयार किया था वो महाभारत के 100 - 50 काल के बीच में अच्छे तैयार किये कैलाये जाने वाले पुराण बाद में हम जैसे महा दुष्टों के बीच में आ गये है और जिनमें मनचाही बातें गढने के लिए एक मात्र शौक बना लिया। आज भी हमारे यहाँ मीत्त पुराण है। एक महाविद्यालय में एक वरिष्ठ मेरे अच्छे परिचित्य थे। वैश्य थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि ये अग्रवाल महापुराण लिखें है आप बताईये ये उचित है या नहीं। मैंने कहा मेरी बात माने थे सब बकवास है। पुराण के नाम पर धोखा है।क्यों करते है? अब आप सोचिए हम नाना पुराण श्री माल पुराण, ये पुराण को हमने इतना सस्ता ले लिया और हमारे टीकाकार क्या करते है -यही तो पुराण की विशेषता है कि जन - जन के अंदर घुस जाये। वाह क्या सुंदर विशेषता है। इस दृष्टि से जो हम देखेंगे कि जो व्यक्ति वाल्मीकी के पहले दो बार व्यास रह चुका है। इसका मतलब व्यास का क्या महत्त्व रहा होगा? व्यास किस पुराण के सामने लाया होगा। उस पुराण को व्युत्पत्ति देने वाला कौन रहा होगा? हम देखें वो पुराण कैसा रहा होगा? क्योंकि वाल्मीकी रामायण में पुराणों की चर्चा है, महाभारत में पुराणों की चर्चा कौन करेगा। व्यास तो है नहीं पुराण परोसने वाले। पर वाल्मीकी का नाम कौन करेगा।

इन व्यासों के अलावा अनेक व्यास और अनेक पुराण है। वाल्मीकी रामायण की इन बातों को हम पढे तो हमें पता चल जायेगा वस्तुतः वास्तविक सत्य क्या है? पर हमने पढा ही नहीं। इस दृष्टि से हम देखते है जो हमने कुछ बातें अब जो कुछ छोटी बाते जो हमने वाल्मीकी रामायण में पढने के बाद भी जिसका किसी सम्प्रदाय से कोई सम्बंध नहीं

है, किसी प्रकार की विशेष विचारधारा से कोई सम्बंध नहीं है। भगवान राम का राज्याभिषेक और रावण का वध हमारे देश में विजय दशमी रावण के वध के रूप में मनाई जाती है। राम का इस कार्तिक मास में दीपावली मनाई जाती है। रामायण स्पष्ट कह रहा है कि चौदह वर्ष पूरा होते ही चैत्र शुक्ल पंचमी को राम का इस भरद्वाज केव आश्रम में थे। भई हमने रामायण पढी है फिर कहाँ गई रामायण। इस प्रकार की शक्ति लेकर के निष्ठा लेकर के उसकी दृष्टि लेकर के हम रामायण का पारायण करेंगे तो क्या हम रामायण को और भगवान वाल्मीकी के उस सम्पूर्ण श्रेष्ठ अभिप्राय को लेकर कि विश्व में ऐसे अन्य नरों की आवश्यकता है कहाँ पूरा ले जायेंगे तो अब लोग कहते है कि ये विजय दशमी क्या है। हमारे यहाँ चार नवरात्री माने जाते है। जो तीन - तीन महिने के अंतर पर है। चार नवरात्रों में तीन ङ्क तीन महिने में नौ दिन की नवरात्रि होती है और दशवे दिन का आहुति दिन होता है। ये जो आश्विन के नवरात्रा है उसके दशवे दिन का जो आहुति रूप है उसका नाम है विजय क्योंकि इस समय वर्षा खत्म हो जाती थी। रास्ते साफ हो जाते थे और क्षत्रिय लोग अपनी विजय यात्रा पर प्रस्थान करते थे। इसी समय शस्त्रों की पूजा की जाती थी। इसको हम मूल गये और विजय दशमी को राम के साथ जोड दिया। हमारे जामवंत सबसे योग्य वानरों में एक है। उसको हमने ऋक्ष शब्द से रीछ बना दिया। मैंने आपको गतबार बताया था कि भगवान वाल्मीकी काक एक नाम ऋक्ष था। असली नाम तो वाल्मीकी काक ऋक्ष ही है। वही ऋक्ष बाली और सुग्रीव का बाप है। 'ऋक्ष रजा' उसको वानरों का राजा क्यों नहीं बनाया। इतने अधूरे ज्ञान को लेकर जब हम रामायण को पढेंगे तो कहाँ तक करेंगे आगे। तो ये कुछ त्रुटियाँ हम देखें तो वस्तुतः ये बिना किसी सम्प्रदाय के होते हुये भी हमारे अज्ञान के कारण्चल रही है कि आदि काव्य क्या है? आदि कवि क्या है? राम ने जिन लोगो को बुलाया वो कवि हैं या नहीं है। राम के पिता के समान मित्र बहुत अच्छे दोस्त अंग नरेश थे। अंग नरेश के यहाँ आकर ऋषियों ने उपदेश दिये। उन्होंने हस्तलिखित एक ग्रन्थ अंग नरेश ने प्रकाशित किया। इस अंग नरेश के दरबार में सैकडों कवि बैठे रहा करते थे। छोटी छोटी चीजों को आधिकारिक रूप में लिखकर और ताल ढोककर तैयार होकर बैठ जाना और अन्त में ज्यादा बात करने पर हम क्या कहें दिखावा था। तो हमारा एक बहुत सुंदर मंत्र है और उसी को हम याद करें-

''सत्यमिव तितियुना पुनन्तः, यत्र धीया मनसा वाचमकृतः।''

वेद का मंत्र है ये। पुनन्तः पवित्र करते हुये छान छून कर खाने लायक बनाते हुये किसकी तरह सत्यमिव सत्तू की तरह किसको। अब बस आगे सत्तू हमने बनाया, तैयार रख दिया। सत्तू पर जिस वक्त काम में लेने आया तो चालानी से छान लिया तो तितियुमा चालनी से छानते हुये मनसा धीया वाचमकृतः धैर्यशाली विद्वानों ने खूब तपस्या करके वास्तविक सत्य को पाकर के केवल हमारे पौराणिक दृष्टि से जिसे आपने नाम दे दिया झूठ को। उस दृष्टि से विश्वास तो

नहीं है। सत्यमिव तितियुमा पुनन्तः धीया मनसा वाचमकृतः। वाणी प्रकट की है। हमारे बहुत सुन्दरभाव है- मुखमस्ति ते वक्त्वां शतहस्ता हरिस्यते। अरे में बोल क्यों नहीं सकता हूँ। देखो सौ हाथ क्या रख दी। हाँ आप बोल सकते हो, सही बोल सकते हो। पर ये बोलना है क्या? वेद की दृष्टि से। सारे संसार में ब्रह्मा के साथ वाणी विश्व के कण कण में है। ये वेद है। इन सारी बातों को दृष्टि में रखकर के और यदि हम रामायण को देखते है या महाभारत को देखते है तो हमारे जीवन में जो नाना प्रकार के मुख्य हो विषय था आज की दृष्टि से सोचने लायक ये भूल गये। मैंने शबरी का नाम लेकर कह दिया। पर आप ये देखिये कौशल्या कौन थी। राजपुत्र राम बनवास में जाते है तो कौशल्या दो बार एक बार जब विश्वामित्र जी ले जाते है तो कौशल्या अपने बेटे का स्वस्ति वचन बोलती है। यहाँ दशरथ अलग स्वस्ति वचन बोलता है वो भी किसी पुरुष को नहीं बुलाता। भगवान वशिष्ट उनके कुलगुरू है तो तीन ङ्क तीन लोग स्वस्ति वचन कहते है। जब वन में जाते है तो कौशल्य स्वस्ति वचन कहती है। स्वस्ति वचन कौशल्या का देखने लायक है और कहती है कि जिन वेदों की तूने दिन रात रक्षा की वो तेरी रक्षा करें । अरे शस्त्र का उसे विश्वास नहीं और किसी का उसे विश्वास नहीं। ऐसा नहीं है। पर वास्तविक विश्वसनीय वस्तु क्या है - वेद। और ये तो छोडों। ये तो वानर ही कहेंगे ङ्क बाली की पत्नी तारा भगवान वाल्मीकी उसके लिए बडा सुंदर शब्द प्रयुक्त करते है कि - ततः स्वस्तिनं चक्रे, मंत्रवित विजयी श्री मन्त्रज्ञां तारा ने अपने पति का विजय चाहते हुए स्वस्त्ययनं चक्रे बाली का स्वस्तिवाचन किया था। आप मंदोदरी को देखिए। तो किसी भी वर्ग को उठाओ, वेद के विषय में इन लोगों में जिस प्रकार की गति है। सीता जिसका पूर्वजन्म माना जाता है एक ब्राह्मणकी लडकी थी और मंत्र बोलते - बोलते पैदा हुई थी और उसी स्त्री से हम कहते है कि तुझे वेद में अधिकार नहीं है। ये कब तक चलेगा। पुराने लोग कुछ गडबड बोल गये। अरे पुराने तक पहुँचो कि गलती कहाँ से हुई। क्यों बढी? जिस व्यक्ति ने ये तय कर लिया कि मैं पढा लिखा हूँ और पढा लिखा होने का अर्थ जो नहीं पढे लिखे है उनको - औरंगजेब के भाई दाराशिकोह द्वारा अनूदित उपनिषदों के संग्रह में 50 उपनिषद् हैं। मुक्तिक उपनिषद् में 108 उपनिषदों की सूची दी हुई है। प्रथम 13 उपनिषदों को छोड़ कर बाकी सभी उपनिषद उत्तरकालीन हैं। इस अध्याय में जिन उपनिषदों का वर्णन है, वे सब प्रारम्भिक उपनिषद् हैं। उत्तरकालीन उपनिषदों में कुछ ऐसी हैं, जो इन प्रारंभिक उपनिषदों की विषयवस्तु को ही दुहराती या उद्धृत करती हैं और कुछ ऐसी हैं, जो शैव तंत्र योग और वैष्णव सिद्धान्तों का निरूपण करती हैं। उत्तरकालीन उपनिषदों में से कुछ ऐसी भी हैं, जो 14 वीं अथवा 15वीं शताब्दी में लिखी गयी हैं।